By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

# Lecture-3



Topic - Meaning, Nature and Scope of Comparative Politics

Class - B.A. Degree - II (sub.)

Subject - Political Science

Date - 16 July, 2020

By Rahul Kumar Jha.

## तुलनात्मक राजनीति के अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र:

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति को लेकर राजनीति विज्ञान के विद्वानों में मतभेद है। यह सत्य है कि अपनी प्रकृति के अनुसार तुलनात्मक राजनीति एक स्वतंत्र अनुशासन है, फिर भी विद्वानों द्वारा इसकी प्रकृति संबंधी निम्नलिखित दो धारणाओं की चर्चा की गई है -

(1) तुलनात्मक राजनीति अनुलंब तुलना है

(2) तुलनात्मक राजनीति अंतर्राष्ट्रीय तुलना है

(1) तुलनात्मक राजनीति अनुलंब तुलना है - इस धारणा के समर्थकों का कहना है कि तुलनात्मक राजनीति एक ही देश में स्थित विभिन्न स्तरों

पर स्थापित विभिन्न सरकारों तथा उनको प्रभावित करनेवाले राजनीतिक व्यवहारों का तुलनात्मक विश्लेषण और अध्ययन है। इसके समर्थकों का दावा है कि प्रत्येक राज्य में अनेक स्तरों पर सरकारें होती हैं। आमतौर से उन्होंने इन सरकारों को दो रूपों में देखा है। प्रथम सर्वव्यापक या सार्वजनिक सरकार जिन्हें हम राष्ट्रीय सरकार भी कहते हैं और दूसरी आंशिक, स्थानीय और व्यक्तिगत सरकार।

इस धारणा के समर्थकों का विचार है कि तुलनात्मक राजनीति का सैद्धांत इस प्रकार की एक ही देश में स्थित विभिन्न सरकारों - सर्वव्यापक और आंशिक की आपस में तुलना से है। उनका विचार है कि यद्यपि एक ही देश में सर्वव्यापक या राष्ट्रीय सरकार तो एक ही होती है, लेकिन आंशिक सरकारें अनेक होती हैं और इसीलिए इनसे सैद्धान्त

राजनीतिक असे संबंध राजनीतिक प्रक्रियाओं तथा संस्थाओं की तुलना करके निश्चित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि एकात्मक राज्य है तो उसमें एक राष्ट्रीय सरकार होगी और अनेक स्थानीय सरकारें या निगम होंगे। यदि व्यवस्था संघात्मक है, तो राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय सरकारें होंगी।

इस धारणा के समर्थकों का कहना है कि एक ही राज्य में विभिन्न स्तरों की विभिन्न सरकारों की तुलना करना अनुलंब तुलना है कहलाता है और तुलनात्मक राजनीति इन्हीं की पारस्परिक तुलना करने से संबंधित है। लेकिन राष्ट्रीय सरकारों और आंचलिक सरकारों के मध्य दीखनेवाली समानता सतही है। यदि इन समानताओं की गहराई में हम प्रवेश करें तो इनमें सिर्फ असमानताएँ ही दीख पड़ती है जिसकी वजह से इनमें सामान्यीकरण की संभावनाएँ नहीं दिखती। अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक राजनीति की व्याख्या एक लंबात्मक अध्ययन के रूप में नहीं की जा सकती।

[CHAPTER CONTINUES...]